रात्रिक्लास 27/6/68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

आबू की प्रदर्शनी पूरी हुई। बच्चों ने बहुत ही दिल व जान, सिक व प्रेम से सर्विस की है। पतित दुनिया को पावन बनाने तुम मेहनत करते हो। पवित्रता है फर्स्ट। बुलाते भी हैं हे पतित–पावन आओ। आकर पावन बनाओ। जैसे वह है कुम्भ का मेला आर्टीफिशियल, यह है रियल। सच्च2 पावन बनना है पावन दुनिया के लिए। वह सभी है भक्तिमार्ग। यह है पावन बनने का एक ही अन्तिम जन्म। यह मृत्युलोक है। मृत्युलोक का अंत, अमरलोक का आदि। यह तो तुम समझते हो जो बाप के पास आते हो। तुम ही सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त को जानते हो। दुनिया जानती नहीं कलियुग का अंत है। बच्चे तो जानते हैं यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। और संगमयुग को पुरुषोत्तम नहीं कह सकते; क्योंकि कलाएँ कम होती जाती हैं। कलियुग के बाद सतयुग आना है; इसलिए पुरुषोत्तम संगमयुग जरूर चाहिए। सतयुग में है पुरुषोत्तम। मनुष्य जानते हैं दैवी–देवताएँ उत्तम हैं। इसलिए जो कनिष्ट हैं उनको नमन करते हैं। अभी तुम बच्चों को पक्का निश्चय है हम मनुष्य से देवता बनने आते हैं। मनुष्य दैवी गुणों वाला बनते हैं तो देवता कहा जाता है। अच्छे गुणों वाले मनुष्य होते हैं तो कहते हैं यह तो जैसे देवता है। तो वह हो जाता है अल्प काल के लिए। तुम 21 जन्मों के लिए बेहद के बाप से बेहद सुख का वरसा पाते हो। नाम ही है स्वर्ग। हेविन। भारत को सच्च–खण्ड भी कहते हैं, झूठ खण्ड भी कहते हैं। बाप आते हैं बच्चों को मीठा बनाने। घड़ी2 कहते रहते हैं मीठे बच्चे। मीठे–मीठे करते मीठा देवता बना ही देते हैं। इस समय तुम बच्चे जानते हो हम ईश्वरीय परिवार में हैं। असुर है नहीं। निश्चय है हम ईश्वरीय परिवार के हैं। वरसा मिलता है। घाटे वा संशय की बात ही नहीं; परन्तु माया संशय में लाती है। इसलिए युद्ध चलती है निश्चय और संशय की। लड़ाई चलती है माया की। वह है रावण सम्प्रदाय यह है राम सम्प्रदाय। बच्चों को यह निश्चय है यह पुरानी दुनिया है। इनको बुद्धि से निकालना ही है। अभी पुरानी दुनिया से वैराग्य है। नई दुनिया से प्यार है। सन्यासियों का है हद का सन्यास। तुम्हारा है बेहद का सन्यास। बुद्धि में है यह पुरानी दुनिया है। हमको नई दुनिया में जाना है। बाप ही पढ़ाते हैं। तुम बच्चों को तो नई दुनिया चाहिए रहने लिए। इनका फिर विनाश होता है। देवता धर्म पुरानी दुनिया में होता नहीं।

मीठे–मीठे बच्चों को घड़ी2 सावधान करते रहते हैं कहाँ माया संशय में न लावे। बाप एक ही बात कहते हैं मीठे बच्चों बेहद के बाप को तुम दुःख में याद करते हो। हे भगवान, हाय राम, रहम करो। सभी कहते हैं। जहाँ भी जाओ हंगामा, मौत, लड़ाई–झगड़े ही हैं। तो जरूर जोर से याद करेंगे ना। बच्चे समझ भी जाते हैं विनाश होता है जरूर स्थापना करने वाला भी कोई है। पहले स्थापना फिर विनाश। त्रिमूर्ति चित्र क्लीयर है। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना। तुम बच्चों को नशा रहता है हम जो नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं। और ऐसे थोड़े ही समझते हैं। वह तो अपने राजा के लिए लड़ते हैं। हमारा किंग तो कोई है नहीं। हाँ, जो रास्ता बताते हैं हम उनके मददगार हैं। अभी तुम पुजारी से पूज्य देवता बन रहे हो। पुजारी असुर, पूज्य देता(देवता)। पूज्य देवताओं के आगे पुजारी असुर जाते हैं। सतयुग में ऐसे होता नहीं। सतयुग में पुरानी दुनिया की कोई नॉलेज नहीं होती। अभी तुम संगम पर हो। तुम पुरानी दुनिया और नई दुनिया को अच्छी रीत जानते हो। भक्ति में है झूठ। उनको कहा जाता है रावण राज्य। एक दो में लड़ते ही रहते हैं। असुर हैं निधणके आरफन हैं। उस प्यार से बाप को याद नहीं कर सकते हैं। तुम जानते हो बाबा आया हुआ है हमको वरसा दे रहे हैं। लव जाता है। वह तो बाप को जानते ही नहीं। निराकार को लव कैसे करें; इसलिए लव देवताओं तरफ चला जाता है। यह है रूहानी लव। रूह अपने सुप्रीम रूह को, बाप को लव करती है। रूहानी बाप पढ़ाते हैं। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। तुम पढ़ते रहते हो। भगवान के महावाक्य तुम नोट करते हो। फिर क्या होता है कोई पूजते करते थोड़े ही हो। ऐसे ही फेंक देते हो। यह पढ़ाई है। इनको कहा जाता है महावाक्य। वह दिल में धारण करना है। सिर्फ धारणा के लिए नोट करते हो। धारणा हुई फिर पद मिल गया। फिर नोट क्या करेंगे।

यह अभी तुम सुनते हो फिर प्रायःलोप हो जाता। बाप ही कल्प2 आकर पढ़ाते हैं और पद प्राप्त कराते हैं। बड़ी बात भी नहीं। कितना सहज ज्ञान है। उस पढ़ाई में तो माथा ही फिर जाता। यह बहुत सहज है। बाप को और सृष्टि चक्र को जानना है और पवित्र भी रहना है। अपन को आत्मा समझते रहो। यह शरीर पहले था नहीं। फिर इस माण्डवे में यह शरीर लिया है। यही बेहद का माण्डवा स्टेज है। इसमें यह सूर्य–चाँद बत्तियाँ हैं। इनको कह देते सूर्य देवता, चन्द्रमा देवता। अभी देवताएँ तो हो न सके। देवताएँ हैं सूक्ष्मवतन में। फिर हैं सतयुग में। बाकी यह तो रोशनी देने वाले हैं। भक्ति मार्ग में उनको भी पूजते हैं। यह है ज्ञान–सूर्य। वह फिर उस सूर्य को पूजते हैं, जल आदि देते हैं। यह सभी है बेसमझ की भक्ति। इतनी बरसात कैसे पड़ती है। यह फिर उनको जल देते हैं। क्या2 करते रहते हैं। यहाँ भी हनुमान का मंदिर है ना। एक दिन एक्सीडेन्ट हुआ, कोई ने कहा यहाँ हनुमान का मंदिर बनाओ। नहीं तो एक्सीडेन्ट आदि होते रहेंगे। बस, बना दिया। आस्ते2 कितना बढ़ाते गये हैं। भक्ति मार्ग का कितना प्रभाव है। बहुत बड़ा झाड़ है। तुम्हारा ज्ञान है बीज। अभी है भारत पर राहू की दशा। बाप आकर भारत को बृहस्पत की दशा में ले जाते हैं। बच्चे जो भी आते हैं कोई भी बात दिल में हो यह यह बाबा से पूछेंगे; परन्तु यहाँ सुनते2 प्रश्न ही उड़ जाते हैं। बेहद के बाप से बेहद का वरसा तो जरूर मिलता है। फिर उसमें चाहिए दैवीगुण और कोई बात ही नहीं। तुम्हारी एमऑबजेक्ट ही यह है। दैवी गुण जरूर है। कोई बीड़ी पीते होंगे, कोई शराब पीते होंगे। जितना2 दैवी गुण धारण करेंगे उतना तुम्हारा ही फायदा। दैवीगुण धारण न करेंगे तो पद भी ऊँच नहीं पावेंगे। बाप आते हैं पुरुषार्थ कराने, पढ़ाने। तो पुरुषार्थ करना चाहिए। घाटा न डालना चाहिए। बाबा ने समझा विनाश होता है जल्दी सभी दे देवें। तुम बच्चे भी समझते हो यहाँ बहुत समय तो रहने का नहीं है। देखते भी हो। पढ़ाई पूरी तो होगी ना। बहुत गई.... अभी के महावाक्य हैं। ऐसे मत समझो कहते रहते हैं। मौत तो होता नहीं। अज्ञान नींद में सोये रहेंगे। विनाश काले विपरीत बुद्धि है ना। तुम्हारी है बाप से प्रीत बुद्धि। बाप को तुम दिल से प्यार करते हो। बाप भी तुमको दिल से प्यार करते हैं। इस समय कमाई करते रहो। 21 जन्म की कमाई है। गफलत मत करो। संग ब्राह्मणों का तारे, कुसंग शूद्रों का बोरे। टाइम बाकी थोड़ा बचा हुआ है। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 28/6/68:– बाप–दादा पूछते हैं, अपन को स्वदर्शनचक्रधारी कौन समझते हैं? क्योंकि ल0ना0 बनने का है ना। कृष्ण को देते हैं स्वदर्शन–चक्र। राधे को नहीं देखेंगे। राधे के लिए नहीं कहेंगे अकासुर बकासुर आदि को मारा। भला यह क्यों? सिर्फ कृष्ण को ही दिया है राधे को क्यों नहीं देते? उनको वास्तव में स्वदर्शन चक्रधारी का अर्थ का ही पता नहीं है; क्योंकि स्वदर्शनचक्र दिया है देवताओं को। हो वास्तव में तुम। निराकार भगवान ने ही आकर तुमको स्वदर्शनचक्रधारी बनाया है। और कोई ऐसे प्रश्न पूछ न सके। कोई2 को किस न किस प्वाइंट वा बात में संशय रहता है। मुख्य बात है परमपिता परमात्मा बाप है तो उनको कोई भी बात में संशय न होना चाहिए। निश्चय में ही विजय है। जिनको संशय है वह स्वर्ग में नहीं आवेंगे। वह भी आवेंगे। फिर भी मुरली तो सुनते हैं ना। तुम्हारी प्रजा बहुत ढेर के ढेर बन रही है। म्युजियम प्रदर्शनी से बहुत प्रजा बनती है। सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी प्रजा, यहाँ बननी है। बच्चों से पूछा जाये किसके पास आये हो, तो कहेंगे शिवबाबा के पास। शिव तो है निराकार। निराकार पास कैसे जावेंगे। वह तो शरीर छोड़ मुक्तिधाम जावेंगे। अभी तुम समझते वह भी भाग्यशाली रथ पर आते हैं। भाग्यशाली रथ मनुष्य का ही होगा। बैल को थोड़े ही भाग्यशाली कहेंगे। बाप कहते हैं तुम पद्मापद्म भाग्यशाली हो। तुम देवताएँ बनते हो। देवताओं को पदम की निशानी देते हैं। तुम बच्चों को भी यह समझना है मर्तबे में बहुत फर्क है। ऊँच मर्तबा कैसे प्राप्त करेंगे। वह है पढ़ाई पर। शिवबाबा डायरैक्शन देते हैं यह यह बनाओ। बहुत बच्चे आकर मेरे से ज्ञान लेंगे। तो शिवबाबा ब्रह्मा को डायरैक्शन देंगे या तुम बच्चों को डायरैक्शन देंगे। पूना में भी अच्छा सेन्टर चाहिए कोई से मांगना

न है। कहते हैं मांगने सिवाय कोई देता नहीं। बाप कहते हैं मांगने से मरना भला। मांगना ठीक नहीं है। सभी को ओना है तो ना हम अपनी राजधानी अपने लिए स्थापन कर रहे हैं। आपे ही मदद करेंगे। ड्रामा में नूंध है। मांगना ठीक नहीं है। ड्रामा में कोई बच्चे राइट कदम को कोई रांग कदम उठा लेते हैं। बाप समझाते हैं राइट कदम उठाओ। चन्दा–चिरा न करना है। दिया एक दो को सुनाया आधा ताकत चली जाती है। बाप गुप्त है ज्ञान भी गुप्त है। हरेक बात गुप्त है। हम ब्राह्मण बच्चे आपस में मिलकर ही मकान बनाते हैं। मांगना न है। बाबा कब कोई से मांगा नहीं है। बच्चे तो बहुत हैं। आपे ही चार्जवाले हाथ में दे देते हैं। बाबा हाथ कब ऐसे नहीं करते। राजाओं लोग पास कुछ देने जाते थे तो कब हाथ में नहीं लेते थे। गिनियां जाकर भेंट रखते हैं। उनको पता है सेक्रट्री को लेना है। ईशारा करेगा लियो वा नहीं। खुद हाथ नहीं लगाते हैं। यह भी बाप दाता है तुम बच्चों को भी देते हैं। कब ऐसे मत समझो हम शिवबाबा को देते हैं। नहीं। दिल में समझना है हम बाबा से तो महल लेते हैं दो मुठी देकर। सुदामा का मिसाल है ना। बाबा ने तो सिर्फ इसमें प्रवेश किया है। तो यह भी लेते नहीं हैं। तो यह भी लेते नहीं है। हाथ जैसे उनकी हो जाती है। बुद्धि भी कहती है यह तो सभी खलास हो जानी है। विनाश तो होना ही है। बाबा को बुलाया ही है पुरानी दुनिया से हमको ले जाओ। तो शरीर सहित ले जावेगा क्या? बाबा आया है जरूर ले जावेगा। जाना भी जरूर है। नई से पुरानी फिर पुरानी से नई दुनिया बननी है जरूर। तुम बच्चे जानते हो स्थापना होनी ही है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना.... यह तो बहुत ही सहज बात है। सिवाय एक बाप के दूसरे कोई में प्रवेश नहीं करते हैं और सीधा कहते हैं, जिसमें प्रवेश करता हूँ यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। मैं जानता हूँ, तुमको बताता हूँ। दिल से बात लगती है बरोबर आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल। हम आत्माएँ पहले2 आते हैं वही पहले पहल जुदा होते हैं। फिर पहले मिलेंगे। सिद्ध होता है 84 जन्म पूरे वही लेते हैं। बाप खुद कहते हैं ब्राह्मण कुल और सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी स्थापन करता हूँ। तीन धर्म पहले ब्राह्मण। फिर वह सूर्यवंशी भी बनते हैं तो चन्द्रवंशी भी बनते हैं। तुम सम्पूर्ण विकारी से फिर सम्पूर्ण निर्विकारी बनते हो। फिर सम्पूर्ण विकारी बनेंगे। दुनिया भी सम्पूर्ण विकारी फिर सम्पूर्ण निर्विकारी बनती है। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। तुम पढ़ रहे हो। पढ़कर पूरा करेंगे फिर ट्रान्सफर हो जावेंगे। यह है बेहद की बात। शिवबाबा साकार तो हो न सके। शरीर तो इनका है ना। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। तुम लिखते भी हो बाप दादा। तुम संगम पर ही ऐसे कहते हो फिर कल्प बाद कहेंगे। बच्चों को समझ होनी यह दादा तो कुछ जान भी नहीं सकते। यह तो तुम्हारे जैसा था ना। महिमा इनकी कुछ नहीं। महिमा तो एक ही है जो हमको ऐसा बनाते हैं। उनको ही याद करना है। जिस याद से ही पाप भस्म हो जावेंगे। बाप कहते हैं मामेकं ....। मनुष्य को भगवान कहना हिरण्यकश्यपु..... जैसे असुर हैं। बाप क्लीयर कर बताते हैं मैं इस रथ में आता जिसने अपने 84 जन्मों का चक्र लगाकर पूरा किया है। तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए। कोई भी बात का डर नहीं। जैसे बाप निर्भय है वैसे बच्चे भी निर्भय। निर्बैर। दुनिया में सभी को एक दो से बैर रहता है। कितना लड़ते–झगड़ते हैं। भारत को अलग किया तो हिन्दू मुसलमानों का बैर पड़ गया। पिछाड़ी में रक्त की नदी भी भारत में ही बहनी है। उनको कहा जाता है खूनी नाहक खेल। कोई ने गुनाह थोड़े ही किया है। ढेर प्रजा मरते रहते हैं। नाहक खून इसको कहा जाता है। तुम आत्माओं का प्यार रहता है परमपिता परमात्मा से। न कि शरीर से। आत्मा हमारा भाई भृकुटि के बीच में रहती है। तो आत्मा को देखना चाहिए भृकुटि के बीच में। यह भी प्रैक्टिस करनी पड़े। आत्मा बाप को देखती है। बाप बच्चों को देखते हैं। बाप को देखते2, याद करते2 पाप कट जावेंगे। जैसे ज्ञान का सागर बनते हैं तुम भी बनते हो। और कोई फर्क थोड़े ही है। आत्मा वही छोटी सतोप्रधान बनती है। कृष्ण भी पढ़ाई से यह बना है ना। आत्मा तो वही है ना। वही प्योर आत्मा होने से उनमें कशिश है। सभी को खैंचते हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।